प्रश्न 3. उत्पादन लागत से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट लागतों एवं अस्पष्ट लागतों में अंतर बताइए।

अथवा

उपयुक्त उदाहरण देते हुए स्पष्ट एवं अस्पष्ट लागतों में अंतर कीजिए।

उत्तर—उत्पादन लागत—वे सभी व्यय जो किसी उत्पादक या फर्म द्वारा वस्तु के उत्पादन व्यय के रूप में किए जाते हैं, उत्पादन लागत कहलाते हैं।

स्पष्ट लागतें—वे सभी लागतें जिनका उत्पादक भौतिक रूप से भुगतान करता है, जैसे—मजदूरी देना, विक्रय लागत आदि।

अस्पष्ट लागतें—वे लागतें जिनका उत्पादक को किसी दूसरे व्यक्ति को भुगतान नहीं करना पड़ता जैसे—स्वयं की फैक्टरी या फर्म।

प्रश्न 4. फर्म के संतुलन की मान्यताएँ लिखिए।

उत्तर—फर्म के संतुलन की मान्यताएँ निम्नांकित हैं—

(1) फर्म के सिद्धांत में यह मान लिया जाता है कि उत्पादक का व्यवहार विवेकपूर्ण होता है। प्रत्येक उत्पादक अधिक से अधिक मौद्रिक लाभ अर्जित करने का प्रयत्न करते हैं।

(2) उद्यमकर्ता प्रत्येक उपज को उत्पादन की एक दी हुई तकनीकी दशाओं में कम से कम लागत पर पैदा करने का प्रयत्न करता है।

(3) एक फर्म द्वारा एक वस्तु का उत्पादन किया जाता है।

(4) प्रत्येक उत्पत्ति के साधन की कीमत दी हुई होती है तथा निश्चित होती है।

प्रश्न 5. पूर्ति से क्या आशय है ? इसे प्रभावित करने वाले तत्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—पूर्ति का अर्थ—किसी वस्तु की पूर्ति से अभिप्राय उस मात्रा से होता है जो किसी निश्चित समय में कीमत विशेष पर बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध हो। जिस प्रकार माँग सदैव समय तथा कीमत से संबंधित

Scanned with CamScanner

होते हैं उसी प्रकार पूर्ति भी निश्चित समय व कीमत विशेष से संबंधित होते हैं। उदाहरण के लिए यह कहा कि बाजार में गेहूँ की पूर्ति 6,000 क्वि. है गलत है, क्योंकि यहाँ कीमत तथा समय का उल्लेख नहीं किया है। अतः सही कथन इस प्रकार होगा कि 300 प्रति क्वि. पर एक माह में गेहूँ की पूर्ति बाजार में 6000 क्वि.

पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व—पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व निम्नलिखित हैं—

(1) अन्य वस्तुओं की कीमतें—अन्य वस्तुओं की कीमतें भी वस्तु विशेष की पूर्ति को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए नायलोन तथा कॉटन वस्त्रों की कीमत में वृद्धि हो जाती है तथा टेरीकाट वस्त्र कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(2) वस्तु की कीमत—अन्य बातें समान होने पर वस्तु की कीमत ऊँची होने पर पूर्ति अधिक होती क्योंकि ऊँची कीमत पर वस्तु को बेचना विक्रेताओं के लिए अधिक लाभप्रद होता है। इसके विपरीत की नीची होने पर पूर्ति कम होती है।

(3) प्राकृतिक तत्व—कृषि से संबंधित वस्तुओं की पूर्ति पर एक सीमा तक प्राकृतिक तत्वों का प्र पड़ता है। उचित वर्षा, सिंचाई के साधन, अच्छे बीज इत्यादि प्राकृतिक तत्व कृषि को प्रभावित करती हैं।

(4) परिवहन व संचार के साधन—यदि देश में परिवहन व संचार के साधन विकसित हैं तो विदेश आयात सुविधा से किये जा सकते हैं जिसके फलस्वरूप वस्तुओं की पूर्ति बढ़ेगी। इसके विपरीत इन साधनों प्रयोग निर्यात में करने पर देश में वस्तुओं की पूर्ति कम हो जायेगी।

Scanned with CamScanner

की दोनों शर्तें पूरी हो रही हैं। इस प्रकार फर्म उत्पादन की उस मात्रा पर साम्य की स्थिति में होगी जहाँ पर कि (i) MR = MC, तथा (ii) MC वक्र MR वक्र को नीचे से काटता है।

प्रश्न 7. औसत स्थिर लागत, औसत परिवर्तनशील लागत और औसत कुल लागत को भली-भाँति समझाइए।

उत्तर—अल्पकालीन औसत लागतें तीन प्रकार की होती हैं—(1) औसत स्थिर लागत, (2) औसत परिवर्तनशील लागत एवं (3) औसत कुल लागत।

(1) औसत स्थिर लागत—औसत स्थिर लागत, कुल स्थिर लागत को फर्म के कुल उत्पादन मात्रा से भाग दिये जाने पर प्राप्त होती है। इसे प्रति इकाई लागत भी कहा जाता है। अर्थात्,

$$\text{औसत स्थिर लागत} = \frac{\text{कुल स्थिर लागत}}{\text{उत्पादन}}$$

अल्पकाल में उत्पादन की मात्रा घटे या बढ़े, कुल स्थिर लागत अपरिवर्तित रहती है। कुल स्थिर लागत में कोई परिवर्तन नहीं होता है, किन्तु उत्पादन के बढ़ने के साथ-साथ औसत स्थिर लागत घटती चली जाती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उत्पादन की मात्रा बढ़ने से कुल स्थिर लागत, उत्पादन की अधिकाधिक इकाइयों में बँटने लगती है। अतः औसत स्थिर लागत क्रमशः घटने लगती है।

(2) औसत परिवर्तनशील लागत—कुल परिवर्तनशील लागत को फर्म के कुल उत्पादन की इकाइयों से भाग दिये जाने पर जो भजनफल प्राप्त होता है, उसे ही औसत परिवर्तनशील लागत कहते हैं। इसे प्रति इकाई परिवर्तनशील लागत भी कहते हैं। अर्थात्,

$$\text{औसत परिवर्तनशील लागत} = \frac{\text{कुल परिवर्तनशील लागत}}{\text{उत्पादन की मात्रा}}$$

कुल परिवर्तनशील लागत, उत्पादन की मात्रा में वृद्धि किये जाने से हमेशा बढ़ती जाती है। चूँकि अल्पकाल में उत्पादन के क्षेत्र में 'परिवर्तनशील अनुपातों का नियम' लागू होता है, इसलिए औसत परिवर्तनशील लागत वक्र प्रारम्भिक अवस्था में गिरता है, क्योंकि उत्पादन वृद्धि नियम या लागत ह्रास नियम लागू होता है,

Scanned with CamScanner

RE × MR

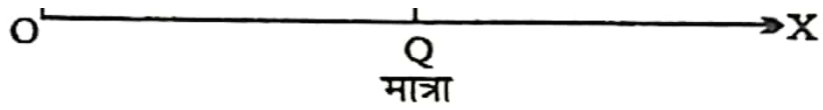

प्रश्न 9. उत्पादन लागत से आप क्या समझते हैं ? कुल लागत, स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत का अर्थ समझाइए।

उत्तर—"अर्थशास्त्र में उत्पादन लागत का अर्थ उन सभी भुगतानों से है जो उत्पादन दर व्यय किये गये हैं। भले ही इसके उत्पादक द्वारा प्रदान की गई पूँजी, भूमि, श्रम आदि सेवाओं का पुरस्कार भी शामिल हो। साहसी का सामान्य लाभ भी इसमें सम्मिलित होता है।" उत्पादन लागत में न केवल वित्तीय व्यय, बल्कि समय, सेवा तथा शक्ति के रूप में किये गये व्यय को भी सम्मिलित किया जाता है।

कुल लागत—किसी फर्म को उत्पादन की एक निश्चित मात्रा उत्पादित करने के लिए जो कुल व्यय करना पड़ता है, उसे फर्म की कुल लागत कहा जाता है। उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ कुल लागतों में वृद्धि होती जाती है। कुल लागतों में सामान्यतः दो प्रकार की लागतें सम्मिलित की जाती हैं—(1) स्थिर या पूरक लागत तथा (2) परिवर्तनशील या प्रमुख लागत। अर्थात्

कुल लागत = स्थिर लागत + परिवर्तनशील लागत।

(1) स्थिर या पूरक लागत—स्थिर लागत से तात्पर्य, उत्पत्ति के स्थिर साधनों पर किये जाने वाले व्यय से होता है। उत्पत्ति के स्थिर साधन ऐसे साधनों को कहा जाता है जिन्हें अल्पकाल में घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता, वे उत्पत्ति के स्थिर साधन कहलाते हैं। ऐसे साधनों पर किया जाने वाला व्यय उत्पादन के सभी स्तरों पर समान रहता है। यदि किसी समय पर उत्पादन शून्य हो जाये, तो भी स्थिर लागत बनी रहेगी। यही कारण है कि स्थिर लागतों को पूरक लागतें, ऊपरी लागतें, सामान्य लागतें एवं अप्रत्यक्ष लागतें भी कहते हैं।

स्थिर लागतों के अन्तर्गत निम्नलिखित लागतों को सम्मिलित किया जाता है—

(i) फर्म की बिल्डिंग का किराया, (ii) स्थिर पूँजी एवं दीर्घकालीन ऋण पर ब्याज, (iii) बीमा शुल्क,

Scanned with CamScanner

लागत, (v) उत्पादन कर एवं बिक्री कर इत्यादि।

प्रश्न 10. उत्पादन फलन को परिभाषित कीजिए। पैमाने के वर्धमान, स्थिर तथा ह्रासमान प्रतिफल को समझाइए।

उत्तर—उत्पादन फलन—यह उत्पादन के आगतों तथा अंतिम उत्पाद के बीच तकनीकी संबंध को बताता है।

$$q = f(x_1, x_2)$$

यहाँ q = उत्पादन की मात्रा, x_1 व x_2 कारक 1 व 2

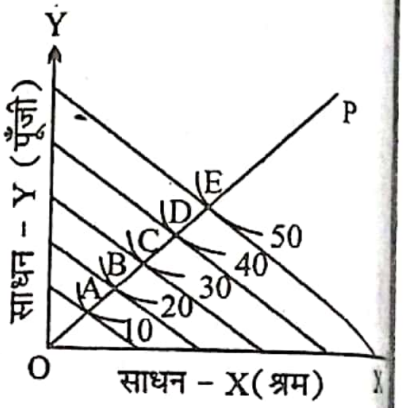

पैमाने के प्रतिफल—दीर्घकाल में उत्पादन के साधनों के समानुपात में बदलने से उत्पादन पर जो प्रभाव पड़ता है, वह पैमाने के प्रतिफल कहलाते हैं। यह दीर्घकाल से संबंधित है तथा सभी आगत परिवर्तनीय होते हैं।

पैमाने के प्रतिफल के तीन निम्नलिखित प्रकार हैं—

पैमाने के बढ़ते प्रतिफल की अवस्था—जब सभी आगतों को एक ही अनुपात में बढ़ाने के फलस्वरूप उत्पादन में, आगतों में वृद्धि की अपेक्षा, अधिक अनुपात में वृद्धि हो है, तो इस स्थिति को पैमाने के बढ़ते प्रतिफल की अवस्था कहा जाता है, **जैसे**—माना कि आगतों में 10% की वृद्धि करने पर उत्पादन में 12% की वृद्धि हो, तो यह पैमाने के बढ़ते प्रतिफल कहलाएँगे।

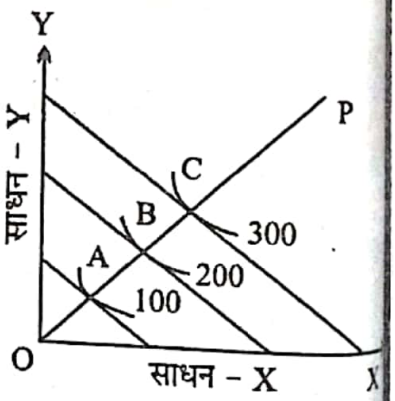

चित्रानुसार OP पैमाने की रेखा है तथा समोत्पाद रेखाएँ क्रमशः A, B, C, D तथा E बिन्दु पर OF रेखा को काटती हैं। यहाँ $DE < CD < BC < AB$ हैं। इस प्रकार से साधनों के अनुपात से ज्यादा उत्पादन में वृद्धि हो रही है।

पैमाने के स्थिर प्रतिफल की अवस्था—जब सभी आगतों में एक निश्चित अनुपात में वृद्धि करने के फलस्वरूप उत्पादन में भी उसी अनुपात में वृद्धि होती है, जिस अनुपात में आगतों में वृद्धि की गई थी। तो इसे पैमाने के स्थिर प्रतिफल की अवस्था कह हैं।

उपरोक्त चित्रानुसार OP पैमाने की रेखा है। साधन X व Y की पहली इकाइयों पर उत्पादन 10 इकाइयों का था, जबकि दोनों इकाइयों की मात्रा बढ़ाकर 2-2 करने पर उत्पादन 200 तथा 3-3 करने पर उत्पाद 300 इकाइयाँ हो जाती हैं। अतः $AB = BC$, यहाँ यह स्पष्ट है कि उत्पादक को पैमाने के स्थिर प्रतिफल प्रा हो रहे हैं।

पैमाने के घटते प्रतिफल की अवस्था—जब सभी आगतों में एक निश्चित अनुपात में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि, आगतों में की गई आनुपातिक वृद्धि की अपेक्षा कम होती है, तो इस स्थिति को

Scanned with CamScanner

		है।	

प्रश्न 14. उत्पादन कार्य क्या है ? इसके आवश्यक तत्वों का उल्लेख कीजिए। (म. प्र. 2019

उत्तर—उत्पादन कार्य का अर्थ—मनुष्य द्वारा किये गये वे समस्त कार्य जिनसे उपयोगिता में वृद्धि है, उत्पादन कार्य कहलाते हैं चाहे वे सेवाएँ हों या भौतिक पदार्थ।

उत्पादन कार्य के आवश्यक तत्व—

(1) अधिकतम उत्पादन या इनपुट की न्यूनतम मात्रा—उत्पादन कार्य में इस बात का विशेष ध्य रखा जाता है कि दिए हुए इनपुट से अधिकतम उत्पादन हो या दी हुई उत्पादन की मात्रा के लिये आवश्य इनपुट की मात्रा न्यूनतम रहे।

(2) मितव्ययी प्रकृति का नहीं होना—उत्पादन कार्य मितव्ययी प्रकृति का नहीं होता है क्योंकि इनपुट तथा आउटपुट के मूल्य को ध्यान में नहीं रखते हैं।

(3) इनपुट तथा आउटपुट में संबंध—उत्पादन कार्य इनपुट तथा आउटपुट के बीच संबंध स्थापि करता है, जिसे तकनीकी प्रकृति का कहा जाता है।

(4) कुशल पद्धतियों का उपयोग—उत्पादन कार्य में तकनीकी दृष्टि से कुशल पद्धतियों को अपना जाता है।

प्रश्न 15. क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम की सीमाओं का उल्लेख कीजिए। (कोई चार) (म. प्र. 2019

उत्तर—क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम की सीमाएँ—उत्पत्ति ह्रास नियम निम्नलिखित मान्यताओं आधारित है—

(1) यह मान लिया गया है कि उत्पादन की तकनीक दी हुई है और उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न होता है।

(2) साधनों के अनुपात में परिवर्तन किया जा सकता है।

(3) परिवर्तनशील इकाइयों को समरूप मान लिया गया है।

(4) उत्पादन के पैमाने को स्थिर मान लिया गया है, इसलिए उत्पादन पैमाने की मितव्ययिताएँ भी प्रा हो जाती हैं।

Scanned with CamScanner